Pratibha Spandan's Journal

CONFLUENCE OF KNOWLEDGE (COK)
(A Multidisciplinary International Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2320–5237 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2024
http://cok.pratibha-spandan.org | © The Author(s) 2024

श्रीरामचरितमानस में संगीतात्मकता

Aanchal Dhalia[1], Dr. Meenakshi Mahajan[2]

1 M.A. Student, Department of Music, CDOE, Himachal Pradesh University, Summerhill, Shimla, Himachal Pradesh
2 Associate Professor, Department of Music, Fateh Chand College for Women, Hisar, Haryana, India

Read the Article Online

Cite this Article

Dhalia, A. and Mahajan, M. (2024). श्रीरामचरितमानस में संगीतात्मकता. Confluence of Knowledge, 11(2), 165-142

सार

तुलसीदास जी राम भक्त थे। साथ ही वे वेद, शास्त्र, पुराण, उपनिषद के प्रकाण्ड पंडित भी थे। राम के चरित्र, उनके गुणों का व्याख्यान प्रत्येक मानस के अंत स्थल में प्रकट करने के लिए उन्होंने रामचरित मानस की रचना की। रामचरित मानस को चौपाई प्रारूप में लिखा गया ताकि इनमें संगीतात्मकता बनी रही, तुलसीदास जानते थे कि जनमानस के आध्यात्मिक विकास के लिए जितनी आवश्यकता धर्म की है उतनी ही जीवन को सुसंस्कृत बनाने के लिए कला की। इसलिए उनके पदों में गीतिकाव्य के सभी गुण मिलते हैं। जनमानस की आंचलिक भाषा अवधि के पद ज्यादा लिखे हैं। इन्होंने कीर्तन भजन लोकगीत शैली में अपने छंदों, दोहों, चौपाइयों की रचना की। तुलसीदास जी ने संगीत को माध्यम बनाकर राम के चरित्र का प्रचार जनमानस में किया। रामचरितमानस सात काण्डों में लिखा गया। इन सात काण्डों में राम जी के चरित्र का सुंदर वर्णन किया गया है। दोहे और चौपाइयों में रचित पदों में आंचल विशेष के लोकगीतों का प्रभाव सर्वत्र दिखाई पड़ता है। रामचरित मानस की चौपाइयां में मधुर नाद का प्रयोग बहुत सुंदरता से किया गया है। इनमें स्वरों के अरोहात्मक - अवरोहात्मकता की क्षमता विद्यमान है। तीनों सप्तकों का प्रयोग करके भाव अभिव्यक्ति प्रकट की। लय का प्रवाह शुरू से अंत तक रामचरित मानस में चौपाई, छंदों, दोहों के माध्यम से बना हुआ है जिस कारण भाव और रस सिद्धि कराने में रामचरित मानस सफल हुआ। ऐसा प्रतीत होता है 'मानस' संगीत के लिए ही रचा गया है। जिस कारण आज भी रामचरित मानस के पदों का गायन कीर्तन भजन शैली में घर-घर में सुना जाता है। इसका प्रत्येक पद लय रूपी धागे में स्वर रूपी पुष्पों के साथ पिरोया हुआ है।

विशेष शब्द: चौपाई, लोकगीत शैली, दोहा, लय प्रवाह मधुरनाद और संगीतात्मकता

भूमिका

प्रत्येक कला का कोई ना कोई आधार आवश्य होता है। काव्य का आधार शब्द की अर्थवत्ता में और संगीत का आधार भाव-व्यंजकता में निहित रहता है। तुलसीदास जी सम्भवतः इसी भाव प्रक्रिया के परिवेश में रामचरित मानस में "श्री रघुनाथ गाथा प्रस्तुत करते हैं।

नाना पुराण निगमागम सम्मतं यद् रामायणो निगदितं क्वचिदन्योऽपि।
स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा भाषा निबंधमति मंजुल माननोति ॥"[1]

"तुलसी का स्वान्त सुखाय ही परान्त: सुखाय बना, इसमें संदेह नहीं है। तुलसी वस्तुतः कवि, दार्शनिक, भक्त, संगीतज्ञ, समन्यवादी, समाज सुधारक आदि सब कुछ थे। किंतु तुलसी का भक्त जितना सबल है। उतना अन्य रूप नहीं।"[2]

भक्त के हृदय की अनुभूति काव्य और संगीत के माध्यम से मुखर होती है। इसलिए तुलसी ने भगवान राम की कथा के लिए 'गाथा' शब्द का प्रयोग किया है। जो नितांत सार्थक है जो तुलसी की संगीत-प्रियता तथा उनकी संगीतज्ञता को स्पष्ट कर देता है। श्लोक , दोहा, चौपाई आदि छंदों का प्रयोग तुलसी ने रामचरित मानस में सप्रयोजन किया है। इन छंदों की गेयता सरल होती है। इसी कारण रामचरित मानस को गेयता के आधार पर भी लोकप्रिय बनाने हेतु भक्त कवि तुलसी ने उपयुक्त छंदों का प्रयोग किया है। तुलसी वेद, उपनिषद शास्त्र तथा पुराण के प्रकाण्ड पंडित थे और संगीत का शास्त्रीय ज्ञान भी उन्हें था। यह बात उनके 'गाथा' शब्द के प्रयोग से स्पष्ट हो जाती है। "हरिवंश पुराण में ऐसा उल्लेख मिलता है जनवर्ग के मनोरंजनार्थ यज्ञ के अवसर पर 'गाथा' नमक गीतों का गान होता था तथा नाट्य भी होता था। अनेक संदर्भों से यह बात प्रमाणित होती है।"[3]

1. "तस्य यज्ञेपुरा गीता गाथा: प्रीतेर्महर्षिभि:"[4]

2. "यस्य यज्ञे जगो गाथा गान्धर्वो नारदस्तथा"[5]

CONFLUENCE OF KNOWLEDGE (COK)
(A Multidisciplinary International Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2320–5237 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2024
http://cok.pratibha-spandan.org | © The Author(s) 2024

3. "इत्येता उशनो गीता गाथा धार्मा विपिशिचता"[6]

4. "गयिमानासु गाथासु देवसंस्तवनादिषु"[7]

5." गाथा अत्यत्र गायन्ति ये पुराणविदोजना:"[8]

इस प्रकार रामचरित मानस को लोकमानस तक संप्रेषित करने हेतु तुलसी ने 'गाथा' शब्द का प्रयोग संगीत के संदर्भ में लोकरंजन गान के रूप में भी किया है।

रामचरित्र मानस के बालकांड में उन्होंने लिखा है

"कीन्है प्राकृत जन-गन गाना। सिर घुनी गिरा लागी पछिताना"[9]

अतः 'गाथा' शब्द का प्रयोग सार्थक और सप्रयोजन है और वह मानस के संगीताधार का व्यंजक भी है। 'मानस' निसंदेह एक वृहद लोक-रंजक गान है जिसमें संपूर्ण भारतीय दर्शनों का समन्यवादी धरातल संगीत बनकर जनमानस में व्याप्त होता चला गया। मानस के इसी संगीतमय रूप ने भारतीय संगीत को भी लोकप्रियता प्रदान की।

मानस में गान, गाथा, गावहि, गावा, गाथा आदि संगीत विषयक शब्दों का व्यापक प्रयोग मिलता है। यह शब्द भिन्न-भिन्न प्रसंग स्थलों पर भिन्न संगीत संदर्भों में प्रयुक्त हुए हैं और तुलसी की बहुज्ञता का परिचय देते हैं। कवि-कोविदा के संदर्भ में बालकांड की निम्नलिखित चौपाइयां द्रष्टव्य है।

"रामचरित सर बिनु अनहवाय। सौ सय जाई ना कोटि उपाय
कवि कोविद-अस ह्दय विचारी। गावहि हरि-जस कलि मल हारी"[10]

'गावहि' शब्द का प्रयोग कवि, भक्त तथा गायक के हृदय की विनम्र तथा विनत भाव भूमि की व्यंजना करता है। जो उपासना के लिए अत्यावश्यक है। तुलसी ने जो 'गावहि' हरिजस-कलि मल हारी पद में गावहि में 'हि' वर्ण में हरी-जस-गान की समवेता को ही व्यक्त किया है। इसी प्रकार गान शब्द का भी एक व्यापक और सार्थक प्रयोग 'मानस' में मिलता है।

"सारद सेष महेस विधि आगम निगम पुरान
नेति नेति कहि जासु गुन करहिं निरंतर गान"।

प्रस्तुत दोहे में गान शब्द से गंभीरता के अतिरिक्त उसकी अलौकिकता की भी व्यंजना होती है।

वैष्णव भक्ति परंपरा में सच्चिदानंद भगवान के आनंद गुण का गायन विवेचन सर्वाधिक हुआ है। यही कारण है कि दक्षिण के अलवार भक्तों से लेकर तुलसी और उसकी परंपरा का संपूर्ण राम भक्ति साहित्य तथा दक्षिण और उत्तर का संपूर्ण कृष्ण भक्ति साहित्य मूलतः गेय ही रहा है। तुलसीदास ने गीतावली और विनय पत्रिका आदि में तो शास्त्रीय संगीत की परंपरा का परिपालन और अनुसरण किया है। किंतु 'मानस' में उन्होंने लोकसंगीत को आधार बनाया है। यह तुलसीदास की बहुज्ञता तथा लोकमंगल भावना का स्पष्ट अभिव्यंजन है जिसे लोकसंगीत का व्यापक पृष्ठाधार मानस में प्राप्त हुआ है। रामकथा के उद्भव और विकास की एक प्रक्रियात्मक परंपरा है। राम की चरित्र-कथा के प्रथम गायक और निरूपक भगवान शंकर है। उन्होंने कृपा करके यह कथा पार्वती जी को सुनाई और रामभक्ति के उचित अधिकारी रूप में शिवजी ने यह कथा काकभुशुण्ड को दी। यह प्रसंग मानस के बालकांड में है। इस प्रकार भगवान शिव ने रामचरित मानस का आरंभ एक गेय कथा के रूप में किया। यह बात इस प्रसंग से स्पष्ट हो जाती है तदुपरांत राम कथा की गेय परंपरा उत्तरोत्तर विकसित होती चली गई यथा:-

"संभु कीन्ह यह चरित्र सुहावा। बहुरि कृपा करि उमहि सुनावा।।
सोइ सिव कागभुसुंडिहि दीन्हा। रामभक्ति अधिकारी कीन्हा।।"[11]
तेहिसन जाग बालिका पुनीपावा। तिन्ह पुनी भरदाज प्रति गावा।
ते स्त्रोता वक्ता समलीला।समदरसी जानहि हरि लीला"[12]

'श्रोता' और 'वकता'अर्थात श्रोता और वक्ता इन दो शब्दों से रामकथा की गेय परंपरा स्वत: व्यंजित होती है। गेय कथाओं की इस परंपरा को गेय धर्म गाथाओं की परंपरा का ही एक रूप समझना चाहिए जिसका आरंभ वैदिक ऋचाओं से हुआ था। गेय कथाएं लोकाश्रित जीवन - परिवेश की अभिव्यंजक भी रही है। "लोकाश्रित गीत दो प्रकार के हो सकते हैं

1. अनुष्ठानिक

2. मनोरंजक"[13]

मानस के संगीत तत्व में लोकाश्रित गीतों के यह दोनों ही रूप हमें मिलते हैं। मानस में अनेक संस्कारों का वर्णन भी हुआ है। विशेषत: जन्म और विवाह आदि के प्रसंग अत्यधिक प्रभावक बन पडे हैं। इन संस्कारों के वर्णन में जहां गेय कथाओं की परंपरा का निर्वाह हुआ है। वहां उनमें लोकहित और धर्मानुभूति की भी अभिव्यक्ति हुई।

"नौमी भौमवार मधुमासा। अवधपुरीं यह चरित प्रकासा।।
जेहि दिन राम जनम श्रुति गावहिं। तीरथ सकल जहाँ चलि आवहिं।।
असुर नाग खगनर मुनी देवा। आई करहि रघुनाथक सेवा।।
जन्म-महोत्सव चाहिं सुजाना। करहि राम कलकरि तिगाना।।"[14]

इस प्रकार संस्कार गीतों की और गेय कथाओं की परंपरा को तुलसी ने चौपाइयों, दोहा, सोरठा तथा छंदों में प्रस्तुत किया है। चौपाइयों की लोक गीतात्मकता सर्वविदित है। अंतर केवल इतना है कि विभिन्न अंचलों के लोकधुनों का प्रभाव उनके संगीतात्मक अभिव्यंजन में स्थान स्थान पर दिखाई देता है। आश्रय यह है कि दोहे और चौपाइयों के गाने में अंचल विशेष के लोकगीतों का प्रभाव सर्वत्र दिखाई देता है।

भक्ति भाव को प्रबुद्ध करने हेतु भगवान के लीलाओं के वर्णन की एक परंपरा उत्तर भारत में विकसित हुई। वैष्णव लीलाओं की इसी परंपरा में तुलसीदास ने भी योगदान दिया। इन लीलाओं का अभिव्यंजन दो प्रकार से होता था - गेय कथा के रूप में और गेय कथा के नाटकीय प्रदर्शन के रूप में। यह परंपरा आज भी उत्तर भारत में विद्यमान है। कृष्ण लीला से अधिक रामलीला का प्रचलन उत्तर भारत में विशेषत: बिहार, उत्तर प्रदेश तथा हरियाणा आदि में आज भी है। रामलीला तुलसीदास कृत रामचरित मानस की चौपाइयों और अन्य छंदों के गेय तथा नाटकीय प्रदर्शन के रूप में ही अधिकांशतः होती है। विभिन्न अंचलों में उसके आंचलिक छंद विधान तथा लोक छंद भी मिलते हैं। जिनका गायन होता है और जिनका लीलात्मक नाट्य प्रस्तुत किया जाता है। रामचरित मानस में इस प्रकार गेयता और नाट्य दोनों तत्व विद्यमान है। " रामचरित मानस में कवि की नजर बराबर रामचंद्र जी की लीलाओं की नाटकीय प्रदर्शन की और ही है। समूचा कथानक संवादों के माध्यम से अनावृत हुआ है।"[15] रामलीला का प्रथम आयोजन वल्लभाचार्य द्वारा किया माना जाता है। "रामलीला का श्री गणेश स्वयं तुलसीदास जी ने किया ऐसी कुछ लोगों की धारणा रही है।"[16] अतः यह बात निर्विवाद रूप से कहीं जा सकती है कि तुलसी ने रामचरित मानस में राम कथा की गेयता तथा उसकी नाटकीयता दोनों को ही ध्यान में रखा है। इसका कारण सम्भवतः यह था कि राम कथा के वैशिष्ट्य की महत कल्पना को रंजकता प्रदान करने हेतु तुलसी ने संगीत तत्व और नाटकीय तत्व दोनों का ही ध्यान में रख कर मानस की रचना की है।

मानस का काव्यतत्व और संगीत तत्व परस्पर सम्बद्ध और अभिन्न इकाइयां है। सम्भवतः तुलसी यह जानते थे कि "एवमेव बिना गानं नाट्य रागं न गच्छति"[17] तुलसी ने अपने शब्दों में भी शिव विवाह के प्रसंग में लीला नाट्य का यह रूप इस प्रकार लिखा है

"नाचहिं गावन्हि गीत परम तरंगी भूत सब देखत श्रुति विपरीत बोलहिं वचन विचित्र विधि"[18]

रामलीला में लीला-नाट्य सर्वत्र दिखाई देता है। लोकांचलो की लोक धुनों का प्रभाव रामलीला के लीला नाट्य में सर्वत्र दिखाई पड़ता है। मानस का यह संगीतमय प्रस्तुतिकरण अद्भुत है। इसके अतिरिक्त हरि लीला के प्रदर्शन में प्राचीन संगीत शास्त्रीय आधार ही अपनाया गया है। मानस में उपन्यस्त भगवान राम की लीला भी प्राचीन भारतीय संगीत के त्रिद्या आधार को लेकर रची गयी है और उसमें नृत्य, गीत, और नाट्य का एक समन्वित रूप दिखाई देता है। मानस में नृत्य गान आदि के अनेक वर्णन मिलते है तथा विभिन्न वाद्यों का प्रासंगिक उल्लेख तथा अवसरानुकूल उनका वादन आदि भी उल्लिखित है।

"बरषहिं सुमन सुअंजनी साजी। गहगहि गगन दुदंमी बाजी ।।
बाजे नभ गहगहे निसाना। देववधू नाचहिं करि गाना ।।
झाँझी मृदंग संख शहनाई। मेरी ढोल दुंदमी सुहाई ।।
हने निसान पनप बर बाजे। भेरी सख धुनि हय गय गाजे ।।
झाँझी मेरी डिडियो सुहाई। सरस राग बाजहिं सहनाई ।।"[19]

उपर्युक्त चौपाइयों में गीत, नृत्य, वाद्य और नाट्य का वर्णन भारतीय संगीत की प्राचीन परम्परा को स्पष्टत: व्यक्त करता है। रामचरितमानस में प्राचीन संगीत का सात्विक आधार भी मिलता है और लोकगीत का स्वरूप भी स्पष्टत: प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त तुलसी ने अपने समय के भारतीय इतिहास के मध्यकालीन संगीत-तत्वों का समावेश भी मानस में कराया है। भगवान राम के चित्रकूट में निवास करने के समय से वहां का सम्पूर्ण वातावरण संगीतमय हो गया ।

"नीलकण्ठ कलकंठ सुक चालक चक्क चकोर।
भांति भांति बोलहिं विहंग सवनसुखद चितचोर ।।
सैल हिमाचल आदि जेते। चित्रकूट जसु गावहिं तेते ।।
विंध मुदितमन सुख ना समाई। समबिनु बिपुल बड़ाई पाई ।।"[20]

यह वर्णन स्वरों की पशु-पक्षियों की ध्वनियों के आधार पर उत्पत्ति का स्मरण दिलाता है जिसका 'नारदीय शिक्षा' में वर्णन मिलता है। राम के प्रभाव से समस्त चित्रकूट सप्तस्वरों में फूटने वाले संगीत की माधुरी से मानो भर गया था।

अरण्यकांड में भक्ति के विभिन्न प्रकारों का वर्णन भी संगीतमय है। भक्ति में हृदय की तरल गेयता प्रवाहित होती है। तुलसी ने नवधा भक्ति का विवेचन अरण्य कांड में किया है।

"नव पल्लव कुसुमित तरू नाना। चंचरी कपटली कर गाना
सीतल मंद सुगन्ध सुभाऊ। संतत बहई मनोहर बाऊ
कुहु कुहु कोकिल धुनि कर ही। सुनि रब सरस ध्यान उनी टरही ।।"[21]

रब-सरस' उपर्युक्त चौपाइयों में बड़ा सार्थक प्रयोग है। संगीत को प्रस्तुत करने के इन शब्दों का प्रयोग अभिनव कलापूर्णता को प्रतिभासित करता है। अलंकार, छंद , स्वर-मैत्री और वर्ण मैत्री का तो मानस मानो एक वृहद कोष है। उपर्युक्त चारों तत्वों का संगीत एक प्रकार से उपजीव्य है। रामचरित मानस में तुलसीदास जी ने रामकथा का गायन किया है।

भले ही भारतीय संगीत में विदेशी प्रभावों के कारण रस तत्व का अब अभाव हो गया हो। किन्तु प्राचीन संगीत और भारतीय लोकगीत पूर्ण रसवत्ता विद्यमान है। सुन्दर काण्ड का एक दृश्य वीरोत्सह पूर्ण संगीत का रसात्मक प्रतिरूप है।

"चिक्करहिं दिग्गज डोल महिगिरि लोल सोगर खर भरे।
मन हरष दिनकर सोम सुरमुनि नाग किन्नर दुख टरे।।
कटकहिं मर्कट विकट भट बहु कोटि कोटिन्ह घाबहिं।
जय राम प्रबल प्रताप कोसलनाथ गुनगुन गावहिं।।"[22]

उत्तर काण्ड का संपूर्ण दार्शनिक पक्ष गंभीरता के साथ ही अतिशय रसमयता से युक्त है।

निष्कर्ष

रामचरित मानस के आठों अध्याय संगीतात्मकता से भरे है। तुलसी दास जी एक अच्छे संगीतज्ञ भी थे ऐसा उनके काव्य मानस को देख कर लगता है। दोहा, चौपाई, सोरठा, छंद, श्लोक सभी में संगीतात्मकता विद्यमान है।मानस की दोहा तथा चौपाईयों के अतिरिक्त उसमें छंदो और श्लोको की स्वरलिपियां यह सिद्ध करती है कि मानस का संगीत पक्ष भी उतना ही प्रबल है जितना उनका काव्य और दर्शनपक्ष। तुलसीदास जी की वाणी में

CONFLUENCE OF KNOWLEDGE (COK)
(A Multidisciplinary International Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2320–5237 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2024
http://cok.pratibha-spandan.org | © The Author(s) 2024

लोक कल्याण और भावोद्वेग की तीव्र अनुभूति प्रकट हुई जब उमड़ी तो उनमें लय-छन्द बहद रूप मे प्रकट हुई । इनके छन्द शास्त्रीय नियमों की अपेक्षा नहीं रखते उनमें लोकभिव्यक्ति और आँचलिक लोकधुनों के माध्यम से ही संगीत प्रकट हुआ है। तुलसीदास जानते थे कि आध्यात्मिक विकास के लिए जितनी आवश्यकता धर्म की है उतनी ही जीवन को सुसंस्कृत बनाने के लिए संगीत कला की है। भक्ति मार्ग का अवलम्बन लेकर कीर्तन भजन लोकसंगीत के सहारे ना जाने कितने लोग संकटों के समुद्र पार कर गए। लोकसंगीत, भजन के माध्यम से इन्होंने अपने इष्टदेव का गुणगान करके संगीत को माध्यम बनाकर धर्म और अध्यात्मक का प्रचार रामचरित मानस के द्वारा किया। संगीतमय होने के कारण ही रामचरितमानस के दोहे, चौपाईयां आज भी घर-घर में गाई जा रही है।

संगीत की विभिन्न शैलियों के माध्यम से रामचरित मानस सदैव जनमानस को आनंदित करता रहेगा। तुलसीदास जी को शास्त्रीय रागों का भी बहुत ज्ञान था जिन्हें उन्होंने विनय पत्रिका और अन्य काव्य ग्रंथों में उनका उल्लेख किया है। परंतु रामचरित मानस उनके हृदय के बहुत करीब था जिसे वह जनमानस तक पहुंचाना चाहते थे। जनमानस शास्त्रीय ज्ञान को नहीं जानता इसलिए उन्होंने जनमानस की प्रचलित शैली भजनों, आंचलिक लोकगीतों के माध्यम से, नाटक रामलीलाओं के आंचलिक भाषाओं को संगीत का रूप देकर रामचरित मानस को सदैव के लिए जनमानस में अमर कर दिया। उनके द्वारा रचित राम चरित मानस ने संगीत को भी दिशा प्रदान की। इनके पदों में स्वरों के अरोहात्मक व अवरोहात्मकता की क्षमता बनी हुई है। तीनों सप्तकों के अंतर्गत इनके पद गाए गए। लय का प्रभाव शुरू से अंत तक इनके पदों में बना होने के कारण खेमटा, कहरवा, दादरा आदि तालों में इनके पदों को आज भी गया जा रहा है। विभिन्न भाव और रस से परिपूर्ण मानस जनमानस में राम जी के प्रति श्रद्धा बढ़ाती प्रतीत होती है। विभिन्न तरह के अलंकारों का प्रयोग मानस की संगीतात्मकता को बढ़ाता है। मानस की रचना संगीत के लिए ही की गई ताकि इसके पदों की रंजकता बनी रहे और राम जी के चरित्र को वह जनमानस के हृदय में पहुँचा। इसी कारण वह जनमानस में मानस की राम कथा को पहुंचाने में सफल हुए।

संदर्भ

1. Tulsi, Ramcharitmanas, Balkand, shalok 7
2. Dr. Mishra uma, karya or sangeet ka parasprik Sambandh, pri-122, Hindi
3. Vyas, ved, Harivansh Puran, vishnu purve, pri-91, 26, Hindi
4. Vyas, ved, Harivansh Puran, vishnu purve, pri-18, 12, Hindi
5. Vyas, ved, Harivansh Puran, vishnu purve, pri-19, Hindi
6. Vyas, ved, Harivansh Puran, vishnu purve, pri-21, 37, 21,19, Hindi
7. Vyas, ved, Harivansh Puran, vishnu purve, pri-46, Hindi
8. Vyas, ved, Harivansh Puran, vishnu purve, pri-75, Hindi
9. Tulsi, Ramcharitmanas, Balkand, pri-78, Hindi
10. Tulsi, Manas, Balkand, pri-79, Hindi
11. Tulsi, Manas, Balkand, pri-78, Hindi
12. Tulsi, Manas, Balkand, pri-79, Hindi
13. Dr. Satinder, Braj Lok Sahitya Ka Adhyan, pri-118, Hindi
14. Tulsi, Manas, Balkand, pri-77, Hindi
15. Mathur Jagdish Chander, Itihas Sheshank Hindi Rangmanch Aevm Natya Rachna Ka Vikas
16. Mathur Jagdish Chander, Itihas Sheshank Hindi Rangmanch Aevm Natya Rachna Ka Vikas
17. Bharat, Natyashashtra, pri-450, Hindi
18. Tulsi, Manas, Balkand, pri-72, Hindi
19. Tulsi, Manas, Ayodhyakand, pri-72, Hindi
20. Tulsi, Manas, Ayodhyakand, pri-156, Hindi
21. Tulsi, Manas, Ayodhyakand, pri-185, Hindi
22. Tulsi, Manas, Ayodhyakand, pri-275, Hindi